मुख्य संरक्षक

प्रो. (डॉ.) विजय कुमार कायत

कुलपति, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

कार्यक्रम संयोजक
प्रो. विष्णु भगवान
अधिष्ठाता, सामाजिक विज्ञान संकाय
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

कार्यक्रम सह-संयोजक
प्रो. राजकुमार सिवाच
लोक प्रशासन विभाग
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

कार्यक्रम संगठन सचिव
डॉ. सुरेन्द्र सिंह
वाणिज्य विभाग
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

सलाहकार समिति

प्रो. हरमोहिंद्र सिंह बेदी
कुलाधिपति
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश

प्रो. आर.एस. पाण्डेय
कुलपति
बाबा मस्त नाथ विश्वविद्यालय,रोहतक

डॉ. मार्कण्डेय आहुजा
कुलपति
गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम

प्रो. राजबीर सिंह
कुलपति
राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रो. अमर सिंह
इतिहास विभाग
केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा, महेन्द्रगढ़

प्रो. दीप्ति धर्माणी
अधिष्ठात्री(शैक्षणिक मामले)
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

प्रो. राजकुमार सिवाच
लोक प्रशासन विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

सम्पादक एवं निर्णायक मण्डल

प्रो. उमेद सिंह
अंग्रेजी विभाग
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय
सिरसा

प्रो. पुष्पा
हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय
रोहतक

डॉ. वेदपाल
हिन्दी विभाग
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय
सिरसा

डॉ. आरती बांसल
सी.एम.के. महाविद्यालय
सिरसा

डॉ. निर्मल सिंह
राजकीय नेशनल महाविद्यालय,
सिरसा

रामदेव
संस्कृत विभाग
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा

आयोजन समिति:

प्रो. विष्णु भगवान, अधिष्ठाता, सामाजिक विज्ञान संकाय चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
प्रो. राजकुमार सिवाच, लोक प्रशासन विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. अभय गोदारा, अर्थशास्त्र विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. सुरेन्द्र सिंह, वाणिज्य विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. आरती गौड़. व्यवसाय प्रबन्धन विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. रविन्द्र, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. रोहतास, अर्थशास्त्र विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ.कमलेश, वाणिज्य विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. संदीप, भूगोल विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. सरस्वती, संगीत विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
डॉ. रीतु, इतिहास विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा
सुश्री रमनदीप, संस्कृत विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

उद्घाटन कार्यक्रम

(06 फरवरी, 2019 प्रातः 11:00 बजे)

मुख्यातिथि
श्रीमान ओ.पी. धनखड़
कृषि मन्त्री
हरियाणा सरकार

अध्यक्षता
प्रो. (डॉ.)विजय कुमार कायत
कुलपति
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,सिरसा

प्रथम सत्र

मुख्यवक्ता
प्रो. हरमोहिंद्र सिंह बेदी
कुलाधिपति
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश

सत्राध्यक्ष
डॉ. मार्कण्डेय आहुजा
कुलपति
गुरूग्राम विश्वविद्यालय, गुरूग्राम

द्वितीय सत्र

मुख्यवक्ता
प्रो. आर.एस. पाण्डेय
कुलपति
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

सत्राध्यक्ष
डॉ. राजबीर सिंह
कुलपति
राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला
विश्वविद्यालय, रोहतक

तृतीय सत्र (सामाजिक समरसता सत्र)

संत समाज एवं सामाजिक संस्थाएं

आमंत्रित संस्थाएं

सतगुरु कबीर सभा,चंडीगढ़
संत कबीर महासभा, जींद
डेरा बाबा भूमण शाह संगरसाधा, सिरसा
बाबा बालकनाथ समिति, सिरसा
गुरूद्वारा प्रतिनिधि, सिरसा
राधा स्वामी सत्संग ब्यास, सिरसा
डेरा बाबा सरसाईंनाथ, सिरसा
दिव्य ज्योति जागृति संस्थान, सिरसा
श्री सनातन धर्म सभा, सिरसा
धानक महासभा, चंडीगढ़
धानक महासभा, फतेहाबाद
श्री धानक धर्मशाला प्रबंधक समिति
एवं सद्गुरू कबीर मन्दिर, सिरसा
अन्य संत समाज एवं सामाजिक संस्थाएं
संत कबीर शिक्षा समिति, हिसार
समाजिक समरसता मंच, हरियाणा
नामधारी संप्रदाय, सिरसा
डेरा बाबा जगमालवाली, सिरसा
प्र.ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, सिरसा
जामा मस्जिद/ ईदगाह प्रतिनिधि, सिरसा
चर्च प्रतिनिधि, सिरसा
जैन समाज, सिरसा
बाल्मीकि मजहबी महापंचायत, हरियाणा
आदि धर्म समाज शाखा, सिरसा
बी.आर. अंबेडकर एक मिशन, करनाल
डॉ. भीमराव अंबेडकर अनुसूचित जाति (एससी-ए)
कर्मचारी वैल्फेयर एसोसिएशन, भिवानी

समापन कार्यक्रम

(07 फरवरी, 2019 सायं 3:00 बजे)

मुख्यातिथि
श्रीमान कृष्ण कुमार बेदी
सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री
हरियाणा सरकार

अध्यक्षता
प्रो. (डॉ.) विजय कुमार कायत
कुलपति
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,सिरसा

CHAUDHARY DEVI LAL UNIVERSITY, SIRSA 2003 अज्ञानान लभते ज्ञानम्

सामाजिक समरसता के पुरोधा

सन्त कबीरदास जी

की

वाणी और विचार-दर्शन के संदर्भ में
दोहा गायन, भाषण व निबंध लेखन पर
हरियाणा सरकार द्वारा प्रायोजित

प्रांत स्तरीय प्रतियोगिता

दिनांक : 06-07 फरवरी, 2019

स्थान :
मल्टीपर्पज हाल
(चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा)

आयोजक :
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा (हरियाणा)
हरियाणा राज्य विधानमण्डल अधिनियम, 2003 (संख्यांक 9) द्वारा स्थापित
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'बी' श्रेणी प्रत्यायित

Printed at:Right Choice Printing Press, Sirsa (92155-28004)

विचार-अवधारणा

एकै पवन एक ही पानी, एक ज्योति संसारा ।
एकहि खाक गढ़े सब भांडे एक हि सिरजनहारा ॥

स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, वेषधारी के आगे प्रचण्ड, दिल के साफ, दिमाग के दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वन्दनीय महात्मा कबीर अपने मौलिक चिन्तन के कारण हिन्दी के भक्त कवियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। मध्यकालीन समाज में जब उनका जन्म हुआ, वह घोर पाखण्ड, कदाचार, विषमता तथा पारस्परिक विद्वेष का शिकार था, इसीलिए उन्होंने धर्म तथा समाज की कुरीतियों, जड़-परम्पराओं तथा अंधविश्वासों के सन्दर्भ में अपने क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किए। वे अज्ञान, असत्य, मिथ्याचार आदि को नष्ट करने के लिए किसी भी सीमा तक कठोर बन सकते थे। अपने तिलमिला देने वाले वचनों के बावजूद वे सच्चे मानवतावादी कवि थे। कबीर इस तथ्य से पूर्णतया परिचित थे कि समाज तथा संसार को स्वच्छ करने के लिए सबसे पहले धार्मिक पाखण्डों पर चोट करके उनकी गन्दगी को साफ करना सबसे जरूरी है। उस समय काबा-काशी, मुल्ला-पण्डित, रमज़ान-एकादशी आदि ऐसी विनाशकारी शक्तियाँ थीं जो समाज में विद्वेष तथा घृणा का वातावरण उत्पन्न कर रही थीं। संत कबीर ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति इन मानवता विरोधी शक्तियों का विध्वंस करने में लगा दी थी।

कबीरदास एक क्रान्तिकारी, युगद्रष्टा व समाज सुधारक कवि थे। उन्होंने तत्कालीन संकीर्ण सामाजिक व धार्मिक वातावरण में नवीन सामाजिक सिद्धांतों का सम्मावेश करने का प्रयत्न किया। उन्होंने रूढ़िवादी परम्पराओं का खण्डन करते हुए समाज में परिवर्तन की धारा को प्रवाहित किया। उन्होंने मध्यकालीन भारतीय समाज में नवीन क्रान्ति उत्पन्न की। सामाजिक विषमता को उन्होंने पाप घोषित किया और ज्ञान के द्वारा लोगों में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को जागृत किया। वे एक सच्चे जनवादी कवि थे और जनता की भावनाओं तथा आकांक्षाओं को भली प्रकार समझते थे, इसीलिए उन्होंने जनभाषा का सहारा लेते हुए समाज की विसंगतियों पर प्रहार किया। तत्कालीन परिस्थितियों के कारण ही वे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के अग्रदूत कवि बन सके।

संत कबीर की गणना उन महान पुरूषों में निस्संदेह की जा सकती है, जिन्होंने अपने समसामयिक समाज की गतिविधियों को भली-भांति परखा तथा उन्हें आवश्यक मोड़ देना अपना परम कर्तव्य समझा। उनको तत्कालीन समाज के अन्तर्गत भले ही पर्याप्त योग्यता अर्जित करने का कभी समुचित अवसर न मिला हो, परन्तु वे इस कारण कभी विचलित व हताश नहीं हुए। उनके पास आत्मबल था और दुर्दम्य साहस था, जिस कारण उन्हें विपथ चल कर भटकने वालों को, चाहे वे किसी भी उच्च स्तरीय वर्ग के क्यों न रहे हों, अपनी भूलों पर एक बार दृष्टिपात करने के लिए सजग कर देना चाहा। ऐसा करते समय उन्होंने किसी भी वर्ग विशेष का पक्ष नहीं लिया और न ही कोई पक्षपातपूर्ण प्रहार किया।

कबीर दास की सामाजिक चेतना पूर्ववर्ती बौद्धों, जैनों, सिद्धों और नाथों से प्रभावित है। कबीर ने समाज में प्रचलित परम्परागत रूढ़ियों, विविध कर्मकाण्डों तथा पंडे, मुल्लाओं के व्यक्तिगत दुर्गुणों की कठोर निन्दा की, परन्तु उनका लक्ष्य था-आदर्श समाज की रचना करना, इसीलिए वे आजीवन सामाजिक समस्याओं से जूझते रहे। सामाजिक प्रगति के लिए वे सदैव प्रयास करते रहे। उन्होंने निरपेक्ष सत्य की अभिव्यक्ति की।

संक्षेप में कबीर मानवता-प्रेमी संत थे। वह भेदभाव की संकीर्णता से ऊपर उठकर उदात्त भावनाओं का संदेश अत्यंत सहज वाणी में देते थे। पाखंड और अंधविश्वास पर उन्होंने प्रखरतापूर्वक प्रहार किया और मानवीय भावनाओं का अपनी साखियों द्वारा जन-जन में प्रचार और प्रसार किया। संत कबीर ने अपनी साखियों में कर्म, भक्ति, गुरू-शिष्य, सत्य, मोह, कथनी-करनी, दया, काम व क्रोध आदि के नए अर्थों व परिभाषाओं से परिचित करवाया है।

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत ऐसे संत कवि महात्मा कबीरदास पर चौ. देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा एक प्रांत स्तरीय प्रतियोगिता 6-7 फरवरी, 2019 को आयोजित कर रहा है, जिसमें हरियाणा प्रदेश के महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय विभिन्न प्रतियोगिताओं हेतु आमन्त्रित हैं , ताकि कबीर वाणी एवं विचार दर्शन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता पर चिंतन व मंथन किया जा सके।

उपरोक्त दो दिवसीय प्रांत स्तरीय समारोह में विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के प्रतिभागियों तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया जाएगा। इस अवसर पर उनके जीवन एवं दर्शन से सम्बन्धित डाक्यूमेंट्री भी दिखाई जायेगी। समारोह के समय संत कबीर के दोहों से सम्बन्धित भजन-गायन व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।

कार्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न नियम निम्न प्रकार से हैं-

1. दोहों के गायन के लिए प्रत्येक प्रतिभागी को 4 से 6 दोहे बोलने अथवा गाने का अवसर दिया जाएगा।
2. भाषण प्रतियोगिता के लिए प्रत्येक वक्ता को 4 से 6 मिनट का समय दिया जाएगा। भाषण प्रतियोगिता के विषय निम्न प्रकार से होंगे-
   (क) जाति उन्मूलन के सन्दर्भ में संत कबीर के विचार
   (ख) संत कबीर की धार्मिक चेतना
   (ग) कबीर काव्य में गुरु का स्वरूप
   (घ) कबीर का आध्यात्मिक दर्शन
   (ड) भारत के विभिन्न धर्मो एवं सम्प्रदायों पर कबीर दर्शन का प्रभाव
3. कार्यक्रम से पूर्व निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा तथा हरियाणा राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों व सामाजिक संस्थाओं के प्रतिभागियों से निबंध लेखन के लिए प्रविष्टियां आमन्त्रित हैं। उपरोक्त नियम 2 में उल्लेखित 5 विषयों एवं कबीर के जीवन दर्शन के संदर्भ में सामाजिक समरसता विषय पर निबंध लिख सकते हैं। निंबंध 1500 से 2000 शब्दों का होना चाहिए। प्रत्येक प्रतिभागी को निबंध की मौलिकता का प्रमाण-पत्र देना होगा तथा संपादकीय मंडल द्वारा चयनित किए गए निबंधों को संकलित कर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा, जिसका समारोह के दौरान विमोचन किया जाएगा।

पुरस्कार राशि (प्रति प्रतियोगिता)

प्रथम पुरस्कार -10000/-रुपए
तृतीय पुरस्कार -5000/- रुपए
द्वितीय पुरस्कार -7500/-रुपए
सांत्वना पुरस्कार -2500/-रुपए
(प्रति प्रतियोगिता दो पुरस्कार)

प्रतियोगिता से सम्बन्धित दिशा-निर्देश एवं सूचनाएँ-

प्रांत स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन : दिनांक 06-07 फरवरी, 2019
निबंध लेखन प्रतियोगिता के लिए निबंध प्रेषण की अन्तिम तिथि : 28 जनवरी, 2019
भाषण एवं दोहा गायन प्रतियोगिता के लिए टीम के नाम भेजने की अन्तिम तिथि: 31 जनवरी, 2019

नोटः

1. निबंध हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी व संस्कृत में से किसी एक भाषा में लिख सकते हैं । निबंध यूनिकोड, क्रुतिदेव : 10 फोंट में ही टंकित होने चाहिए ।
2. प्रतियोगिता में पंजीकरण निःशुल्क होगा ।
3. प्रतिभागियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाएगी ।
4. प्रतिभागियों का यात्रादि व्यय सम्बन्धित महाविद्यालय, संस्था स्वयं वहन करेंगे ।
5. किसी भी विवाद की स्थिति में विश्वविद्यालय प्रशासन का निर्णय सर्वमान्य होगा।
6. निबंध एवं टीमों का नाम saintkabircdlu@gmail.com ई मेल संकेत पर भेज सकते हैं।
7. कार्यक्रम से संबंधित नवीनतम जानकारी के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.cdlu.ac.in पर देखते रहें।

सम्पर्क सूत्र :
98125-56101, 94160-22116, 94678-42999, 94672-54231, 94678-57579

विश्वविद्यालय एक नज़र में....

चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय ने अपने उद्देश्य के रूप में, एक जीवंत सभ्य समाज में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के प्रसार के माध्यम से युवा दिमाग के 360 डिग्री परिवर्तन की परिकल्पना की है।

2 अप्रैल, 2003 को स्थापित, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा का नाम भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री जन नायक चौधरी देवी लाल के नाम पर रखा गया है। यह विश्वविद्यालय हरियाणा सरकार द्वारा 2003 के राज्य विधानमंडल अधिनियम 9 के तहत स्थापित किया गया है। इसे 2003 और 2008 में क्रमशः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 2 (एफ) और 12 (बी) के तहत अनुमोदित है। यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (एनएएसी), बेंगलुरु द्वारा 'बी' ग्रेड से मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय का सिरसा में स्थित लगभग 214 एकड़ का विशाल परिसर है। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य विविध क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की सुविधा और इसे बढ़ावा देना है। विश्वविद्यालय में कैम्पस कॉलेज सहित 24 शिक्षण विभाग हैं जोकि आवश्यक बुनियादी सुविधाओं से सुसज्जित हैं । विश्वविद्यालय में पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, छात्रावास, स्वास्थ्य केंद्र, बैंक, शॉपिंग सेंटर और इंडोर स्टेडियम आदि की सुविधा है। विश्वविद्यालय ने शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और खेल में नई ऊंचाइयों को छुआ है।